परमपिता शिव परमात्मा का दिव्य अवतरण
महाशिवरात्रि महोत्सव

परमात्मा शिव सृष्टि के अनादि, अविनाशी मूल आधार:

जीवन और सृष्टि के सृजन, पालन और विनाश का अनुपम राग परमात्मा शिव में समाहित है। शिव के बिना जीवन शव है, निस्तेज है इसलिए भारतीय दर्शन में शिव की सर्वोच्चता निर्विवाद है। परन्तु आस्था और मूल्यों के घोर पतन के इस महा कलिकाल में देवाधिदेव देवेश्वर परमात्मा शिव के सम्बन्ध में अनेक काल्पनिक और अश्लील दन्त कथाएं प्रचलित हैं। परिणामस्वरूप परमात्मा शिव से मिलन की चाह रखने वाले भक्तगण महाशिवरात्रि पर बेलपत्र, बेर तथा अक आदि चढ़ाकर, व्रत-उपवास और रात्रि जागरण कर सच्चे मिलन की आस में प्रतिवर्ष शिवालय से वापस लौट आते हैं। परन्तु हे शिव भक्तो! अब आपके सच्चे मिलन की आस पूरी होने की शुभ घड़ी आ चुकी है। परमपिता परमात्मा शिव वर्तमान समय इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। स्वयं निराकार परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के साधारण तन का आधार लेकर अपना परिचय और सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का रहस्य समझा रहे हैं।

शिवलिंग: ज्योतिर्लिंग परमात्मा शिव की प्रतिमा

विश्व के विभिन्न धर्म, संस्कृति और विचारधारा के लोग परमात्मा के बारे में एक सर्वमान्य राय रखते हैं। वह यह है कि परमात्मा शिव ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप और अशरीरी हैं। भारत में परमात्मा शिव की स्थूल प्रतिमा को 'शिवलिंग' अथवा 'ज्योतिर्लिंग' कहा जाता है। भारत में द्वादश ज्योतिर्लिंग अत्यन्त आस्था के केन्द्र हैं जिनका दर्शन-अर्चन करके भक्तजन अपने को धन्य समझते हैं। शास्त्रीय दृष्टिकोण से शिव का अर्थ होता है कल्याणकारी और लिंग का अर्थ होता है चिन्ह अथवा प्रतिमा। शिवालयों में स्थापित शिवलिंग परमपिता परमात्मा शिव की यादगार प्रतिमा है और शिवरात्रि उनके दिव्य और अलौकिक कर्मों का यादगार महापर्व।

परमात्मा शिव सर्व मनुष्यात्माओं के पिता

ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप परमपिता परमात्मा शिव सर्व मनुष्यात्माओं के परमपिता हैं। शिव ही समस्त देवताओं के आराध्य हैं, अनादि, अजन्मा और अविनाशी हैं। परमात्मा शिव - ज्ञान के सागर, गीता ज्ञान दाता, दिव्य-चक्षु दाता, पतित पावन हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के रचयिता होने के कारण ही उन्हें त्रिमूर्ति शिव कहा जाता है। विनाश के निमित्त सूक्ष्म शरीरधारी शंकर देवता, परमात्मा शिव की रचना हैं। प्रायः सभी धर्मों के लोग आज भी भिन्न नाम और विधि से उनकी पूजा करते हैं। भारत में परमात्मा शिव की सोमनाथ, अमरनाथ, विश्वनाथ, बबूलनाथ, बद्रीनाथ, तारकनाथ, रामेश्वर, गोपेश्वर, महाकालेश्वर इत्यादि नामों से पूजा की जाती है। मुसलमानों के पवित्र तीर्थस्थल मक्का में 'संग-ए-असवद' है, जो शिवलिंगाकार है, मुस्लिम इसे श्रद्धा और सम्मान से चूमते हैं क्योंकि इसे वे अत्यन्त पवित्र मानते हैं जब कि इस धर्म में मूर्ति पूजा का पूर्णतः निषेध है। इसी प्रकार इजराइल, मिश्र, सीरिया इत्यादि देशों में शिवलिंग की किसी-न—किसी रूप में आज भी पूजा की जाती है। विभिन्न धर्मावलम्बी परमात्मा को 'नूर', 'डिवाइन लाइट', ओंकार इत्यादि

मानते हैं, जो परमात्मा शिव के यथार्थ परिचय ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप का भाषान्तर मात्र है।

शिवरात्रि का रहस्य:

महाशिवरात्रि का पर्व परमपिता परमात्मा शिव के कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि से पूर्व वर्तमान संगमयुग पर किये गये दिव्य एवं अलौकिक कर्मों का यादगार पर्व है। सृष्टि चक्र के अविनाशी ड्रामानुसार जब चारों ओर अधर्म, पापाचार, भ्रष्टाचार, अनाचार, कदाचार का तांडव नृत्य होने लगता है, हरेक मनुष्यात्मा पतित एवं विकारी बन जाती है तो परमात्मा शिव परमधाम से इस साकार लोक में अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस सृष्टि का पूर्ण परिवर्तन करा देते हैं। परमात्मा शिव को इस सृष्टि पर अवतरित हुए 71 वर्ष हो चुके हैं। वे सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का रहस्य, कर्मों की गुह्य गति, कल्पवृक्ष, तीन लोक इत्यादि आध्यात्मिक सत्यों का उद्घाटन कर रहे हैं। इसलिए हे शिव भक्त गण! परमात्मा शिव द्वारा दिये जा रहे ईश्वरीय ज्ञान से अपनी आत्मा में व्याप्त अज्ञानता और विकारों के अंधकार को सदा-सदा के लिए मिटा दो। भोलेनाथ आशुतोष भगवान शिव 'अमरभव' का वरदान दे रहे हैं, इससे जन्म-जन्मान्तर के लिए अपने जीवन का श्रृंगार कर लो। कहीं ऐसा न हो, परमात्मा शिव अपना दिव्य-अलौकिक कर्म करके वापस चले जायें और आपकी परमात्म मिलन की आस अधूरी रह जाये। याद रखें अभी नहीं तो कभी नहीं ....।

संस्था का परिचय:

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना 1937 में स्वयं निराकार परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से की थी। इसका अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू, राजस्थान में है। विश्व के 90 से अधिक देशों में इसके 6000 से भी अधिक सेवाकेन्द्र चरित्र निर्माण की अनवरत सेवा कर रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ से यह संस्थान, गैर सरकारी संस्थान के रूप में संलग्न है तथा उसकी आर्थिक व सामाजिक समिति और यूनिसेफ का भी सलाहकार सदस्य है। इसे सन् 1981 व 1986 में संयुक्त राष्ट्र संघ का शान्ति पदक मिल चुका है तथा इसकी मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी को मानवता का आध्यात्मिक मार्गदर्शन करने और विश्व-शान्ति की दिशा में उल्लेखनीय कार्य करने के लिए 1987 में अन्तर्राष्ट्रीय ''शान्तिदूत'' पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। सन् 1994 में भारत सरकार ने इस के संस्थापक पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा की पुण्य स्मृति में डाक टिकट जारी कर इसे विशेष गौरव प्रदान किया।

संयुक्त राष्ट्र संघ के वरिष्ठ अधिकारीगण, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश, भारत के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री, राज्यपाल, गणमान्य राजनेतायें, सर्वोच्च तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश, जाने-माने वैज्ञानिक व अधिकारीगण, शिक्षाविद्, कलाकार, जगद्गुरु, महामण्डलेश्वर, धर्मगुरु तथा हर क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्ति, समय-समय पर आयोजित विभिन्न सम्मेलनों में भाग लेते रहे हैं। यह विश्व विद्यालय श्रेष्ठ समाज निर्माण का कार्य सर्व में आध्यात्मिक जागृति द्वारा कर रहा है।

ओम् शान्ति